Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम मेधा और हिंदी भाषा का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य

डॉ. दीपक विनायकराव पवार*
हिंदी विभागाध्यक्ष
दिगंबराव बिंदू महाविद्यालय, भोकर जिला- नांदेड (महाराष्ट्र)

शोध सार

कृत्रिम मेधा (AI)आधुनिक युग में तकनीकी विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। यह शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग सेवाओं और वैज्ञानिक अनुसंधान जैसे क्षेत्र में क्रांती लेकर आई है। जैसे स्वास्थ्य क्षेत्र में ए आई आधारित तकनीकें रोग निदान और सर्जरी में सटीकता प्रदान करती हैं, वहीं शिक्षा में स्मार्ट क्लासरूम और व्यक्तिगत शिक्षण वेदी छात्रों को बेहतर अनुभव देते हैं। इसके अलावा उद्योगों मे स्वचालन और उत्पादन गुणवत्ता मे सुधारने कृत्रिम मेधा की उपयोगिता को और बढ़ाया है। भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि यह मानवीय विचारों, भावना और ज्ञान को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है और इसका विकास ही हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक उन्नति का द्योतक है। कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence AI) के साथ हिंदी भाषा का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण किया गया है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है और ऐसी संभावनाएं की जा रही हैं कि अगले दशक में इसकी बदौलत हमारी दुनिया का कायाकल्प हो जाएगा।

बीज शब्द: ऑनलाइन प्रकाशन ,ई-पुस्तकें, कॉपीराइट , साहित्यिक चोरी, डिजिटल क्रांति, वेब पत्रिकाएँ

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. दीपक विनायकराव पवार
Email: pravedee@gmail.com

विषय विवेचन -

हिन्दी एक समृद्ध, भाषिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परम्परा की वाहिनी हैं। वह संस्कृत जैसी प्राचीन सम्पन्न भाषा की उत्तराधिकारिणी है। उसे ध्वनि और शब्द सम्पदा दोनों ही दृष्टियों से विभिन्न भारतीय तथा विदेशी भाषाओं से असंख्य शब्दों ग्रहण कर तथा भाषिक प्रकृति में ढालकर हिन्दी को समृद्ध किया है। विभित्र क्षेत्र संतों तथा विभिन्न मतों और धर्मों के अनुयायियों ने हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति माध्यम बनाया और हिन्दी को देश के कोने-कोने तक पहुँचाया। यही कारण है ही सम्पूर्ण भारत की एक ऐसी भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा काम से कच्छ तक समझी व बोली जाती है। वस्तुतः एक हजार वर्षों से हिन्दी देश सामाजिक संस्कृति की वाहिका रही है। वह देश के विभिन्न भाषा-भाषी प्रान्तों की सम्पर्क भाषा एवं धार्मिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक केन्द्रों में आदान-प्रदान माध्यम रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में सांस्कृतिक वैचारिक विभिन्नताओं के बीच एकता को मूर्त करने में हिन्दी की भूमिका विशिष्ट रही है। भारत में सांस्कृतिक सूत्रों का समन्वय इसी कारण बिखरावग्रस्त नहीं हो सका कि इस बहभाषी राष्ट्र में समूचे जनमानस को सामाजिक एकता के सूत्र में बाँधने वाली कड़ी के रूप में हिन्दी विद्यमान है "भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को यदि हम देखें तो उनमें अद्भुत समानताएँ दिखती हैं. जो नितान्त संयोग न होकर उन भाषाओं के साथ उनमें सामाजिक सम्बन्धों की द्योतक हैं, बाहरी विभिन्नता तथा आन्तरिक एकता को प्रदर्शित करती है। यह समानता प्रभुद्ध, शब्द, वाक्य तथा लिपि सभी स्तर पर दिखाई देती हैं। भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में भाषिक स्तर पर समानता हिन्दी पडती भारतीय भाषाओं के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या करती है। भारतीय भाषाओं की इस मूलभूत एकता का कारण देश की

सांस्कृतिक एकता है। धर्म, दर्शन, साहित्य, कला तथा संस्कार की एकता भाषायी एकता को सुदृढ़ करती है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी व्याकरणिक विशेषताएँ हैं, उनकी अपनी विधियाँ हैं, उनकी अपनी समृद्धि साहित्यिक परम्पराएँ है किन्तु उनमें पारस्परिक समानताएँ भी हैं जो साधिक बोधगम्यता बढ़ाती हैं और सभी को एक दूसरे से जोड़े हुए हैं जिससे हम भारत को एक वृहत भाषायी क्षेत्र के रूप में देखते हैं।

आज हम आपस में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, वह नई तकनीक से जुड़ी भाषा है। पौराणिक समय में साधु संतों द्वारा बोली जाने वाली एवं साधारण लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा से एकदम अलग है। आज हम अत्याधुनिकता में जी रहे हैं। रोज नए-नए उपकरण समाज में और बाजार में आ रहे हैं। जो सीधे-सीधे हमें अपने टीवी एवं मोबाइल के माध्यम से प्राप्त हो जाते हैं। कंप्यूटर की भाषा का इस्तेमाल करते-करते हम अपने ही कुछ शब्दों को धूमिल करते जा रहे हैं। रोज मर्रा की बोलचाल की भाषा आज बदलती जा रही है। बच्चों में भी बोलचाल की भाषा का स्वरूप बदल रहा है। बच्चे आज वही भाषा बोल रहे हैं जो टीवी रेडियो एवं मोबाइल पर प्रसारित की जा रही है। भाषा किसी राष्ट्र या समुदाय की संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। भाषा के विषय में पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी कहते हैं कि " भाषा में ही वह शक्ति है कि वह सारे संसार को एकसूत्र में बाँध सके। भाषा समन्वय सूत्र है। प्रत्येक स्वभाषा-भाषी को एकता बाँधे रखती है, अतः भिन्न होते हुए भी एकत्व की अनुभूति करते हैं। विश्व भाषा विश्व-मानव को एकसूत्र में समन्वित कर जागृत करती है।"

आज के मीडिया और तकनीकी युग में भाषा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। हिंदी, जो भारत की एक प्रमुख और व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, अब सिर्फ एक सांस्कृतिक और पारंपरिक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली संवाद और जानकारी प्रसारण के माध्यम के रूप में भी उभर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के विकास के साथ हिंदी भाषा का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। इससे न केवल हिंदी भाषी लोगों के बीच संवाद आसान हुआ है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है। हिंदी भाषा, जो भारतीय उपमहाद्वीप में एक प्रमुख भाषा के रूप में अस्तित्व रखती है,। हिन्दी ने पिछले कुछ दशकों में दुनिया भर में विशेष रूप से मीडिया और तकनीकी युग में, एक नई दिशा और उच्चता प्राप्त की है। राजीव गांधी ने कहा कि हिंदी हमारे दिलों की भाषा है। यह एक ऐसा माध्यम है, जो हमारे विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक धरोहर को व्यक्त करने का सबसे प्रभावशाली तरीका है।" सूचना और संचार तकनीकी (ICT) के विकास के साथ-साथ हिंदी का उपयोग वैश्विक स्तर पर बढ़ा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिंदी भाषा को एक वैश्विक संवाद माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया है।

कृत्रिम मेधा का परिचय एवं प्रासंगिकता :

इस जादू के सम्मान उन्नत तकनीकी के जनक सर जॉन मैकरथी माने जाते हैं जिन्होंने पहली बार 1952 ई. इस शब्द का प्रयोग किया था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जिसे हम अँग्रेज़ी में Artificial Intelligence कहते हैं, एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को मानव जैसे कार्य करने में सक्षम बनाती है। यह भाषाओं के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), और अन्य ए. आई. तकनीकों के माध्यम से भाषाओं का अनुवाद, स्वर पहचान, और संचार अधिक सरल हो गया है।यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि हिंदी भाषा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्या प्रासंगिकता है और वह इस भाषा के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की ही तरह सीख सकती है, विशाल स्तर पर आंकड़ों का विश्लेषण कर

सकती है, चीजों पर निगरानी रख सकती है, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है'।

मानव सभ्यता के इतिहास में अनेक मौकों पर ऐसी प्रौद्योगिकी को घटित होते हुए देखा है जिसने हमारी दुनिया को बड़ा कर दिया है। सबसे पहला उदाहरण है प्रिंटिंग प्रेस जिसने ज्ञान और सूचना का लोकतंत्रीकरण किया, दूसरा भाप से चलने वाला इंजन जिसने दूरियों को संकुचित किया, तीसरा है बिजली जिसके बिना हम आज अपनी दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते, चौथा है पर्सनल कंप्यूटर जिसने शिक्षा और मनोरंजन को बदल दिया, पाँचवी है इंटरनेट जिसने विश्व के देशों की भौगोलिक सीमाओं को तोड़ सूचनाओं का लोकतंत्रीकारण किया। ये सभी अपने दौर की disruptive technique अर्थात् तत्कालीन परिपटियों को बदल कर रख देने वाली तकनीकें थी। ये सब आज जिंदगी का स्वाभाविक हिस्सा है। ऐसी काल विभाजक तकनीके शताब्दी में एकाध बार आती हैं। मौजूदा दौर में ऐसी ही काल विभाजन कर चुपके से हमारी जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। इसका सबसे उत्तम उदाहरण है आपका मोबाइल फोन जो हर समय आपके सहायक के रूप में आपके आदेश का जैसे पालन करता है। जैसे फोन या कंप्यूटर पर आप बोल कर टाइप कर सकते हैं, लिखे हुए टेक्स्ट को गूगल, अलेक्सा या सिरी आपको बोलकर सुनकर डेटा को मिली सेकेंड्स में आप विश्व की किसी भी भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। अब उसे कुछ खास किस्म की दिशा निर्देश की जरूरत भी नहीं पड़ती क्योंकि वह हमारी भाषा को समझने लगा है जिसे NLP (Natural Language Processing) कहते हैं। पिछले दो साल से chat gpt की बहुत चर्चा हो रही है क्योंकि अब यह सूजन का काम भी करने लगा है। AI हमारे मोबाइल, कार, टीवी, आदि सभी जगह है। यहाँ तक कि आप कपड़ों को भी खरीदने से पहले virtually पहन कर देख सकते हैं। तकनीकी के इसी चमत्कार के विषय महान साइंस फिक्शन लेखक आर्थर सी. क्लार्क हतप्रभ होकर कहते हैं कि "कोई भी पर्याप्त रूप से विकसित प्रोद्योगिकी किसी जादू से कम नहीं होती।" (Any sufficiently advanced technology is indistinguishable from magic.)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा भाषा कौशल का विकास हमारी शिक्षण प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। कृत्रिम मेधा भाषा अध्ययन और अधिगम के तरीकों में अभूतपूर्व परिवर्तन ला रही है। हिंदी भाषा तथा तकनीक के क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे बालेन्दु शर्मा दाधीच माइक्रोसॉफ्ट में 'निदेशक स्थानीय भाषाएँ और सुगम्यता' (Director- Local Languages & Accessibility) के रूप में कार्यरत हैं और भारतीय भाषायी मुद्दों पर इस वैश्विक संस्थान के प्रवक्ता हैं। वे कहते हैं कि 'ए आई आने वाले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है'।भाषा का संरक्षण और प्रचार कृत्रिम मेधा के माध्यम से स्वचालित हिन्दी सामग्री जैसे ब्लॉग, कहानियाँ आदि तैयार की जा रही हैं जिसने डिजिटल मंचन पर हौइन्डी का प्रचार बढ़ाया है। हिन्दी कहानी, कविता और गीत रचकर अभिव्यक्ति को संरक्षित किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा :

भाषा कौशल का विकास हमारी शिक्षण प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। कृत्रिम मेधा भाषा अध्ययन और अधिगम के तरीकों में अभूतपूर्व परिवर्तन ला रही है। हिंदी भाषा तथा तकनीक के क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे बालेन्दु शर्मा दाधीच माइक्रोसॉफ्ट में 'निदेशक स्थानीय भाषाएँ और सुगम्यता' (Director- Local Languages & Accessibility) के रूप में कार्यरत हैं और भारतीय भाषायी मुद्दों पर इस वैश्विक संस्थान के प्रवक्ता हैं। वे कहते हैं कि 'ए आई आने वाले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है'।

भाषा का संरक्षण और प्रचार :

कृत्रिम मेधा के माध्यम से स्वचालित हिन्दी सामग्री जैसे ब्लॉग, कहानियाँ आदि तैयार की जा रही हैं जिसने डिजिटल मंचन पर

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

हौइन्डी का प्रचार बढ़ाया है। हिन्दी कहानी, कविता और गीत रचकर अभिव्यक्ति को संरक्षित किया जा रहा है।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दूसरा बड़ा प्रभाव होगा अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों का विकसित होना। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टैगोर, सुब्रह्मण्य भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी के साहित्य से लेकर रामचारितमानस, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद- योग जैसी ज्ञान संपदा, हमारी पत्रकारिता और विश्वविद्यालयों के शोध आदि दुनिया भर में गैर-हिंदी पाठकों तक पहुँच सकते हैं।

सीमाएँ एवं चुनौतियाँ :

डेटा की कमी : हिंदी भाषा के लिए पर्याप्त मात्रा में विविध और गुणवत्ता वाले डेटा का अभाव है, जिससे कृत्रिम मेधा मॉडल की प्रामाणिकता प्रभावित होती है।

भाषाई विविधता : हिंदी की विभिन्न बोलियों और उच्चारणों को समझनाऔर उनमें एकरूपता लाना कृत्रिम मेधा के लिए चुनौतीपूर्ण है। हिन्दी की भाषाई विविधता को संयोजित करना अभी कृत्रिम मेधा के लिए एक दुष्कर कार्य है।

पक्षपात : AI सिस्टम में अंग्रेज़ी-केंद्रित डेटा पर आधारित है, जिससे हिंदी के उपयोग में कठिनाई होती है तथा हिन्दी भाषा के मर्म और संवेदनशीलता में कमी आ जाती है।

बेरोजगारी की समस्या : आज पूरे विश्व में मानव के कार्य-प्रणाली और कजूद के सवाल पर चर्चा चल रही है क्योंकि यह बिना थके और बिना रुके काम करेगा और जिसमें निवेश केवल एक बार ही किया जाएगा। ग्राहक सेवा और अनुवाद सामग्री लेखन तथा सृजनात्मक कार्य क्षेत्रों में बड़ी संख्या में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

कृत्रिम मेधा से उत्पन्न चुनौतियाँ :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के खतरे की ओर आगाह करते हुए स्टीफन हॉकिंग "The development of full artificial intelligence could spell

the end of the human race."

टेस्ला और स्पेसएक्स जैसे अत्याधुनिक तकनीकी व्यवसायों के लिए जाने वाले एलोन मस्क कृत्रिम मेधा के प्रशंसक नहीं हैं। उनका मानना है कि"AI परमाणु हथियारों से भी अधिक खतरनाक हो सकता है।" मस्क ने एआई के विकास पर राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय नियमों की स्थापना का आह्वान किया। (Al could be more dangerous than nuclear weapons. Musk called for the establishment of national or international regulations on the development of Al).

अब सवाल यह है कि क्या बुद्धिमान मशीनें बेरोजगारी बढ़ा देंगी या मनुष्य को और निपुण बनाएंगी? इस सवाल का जवाब वर्तमान परिस्थितियों में दे पाना संभव नहीं है। जब इनका प्रयोग होने लगेगा तब यह समझना कि कैसे किसी कार्य क्षेत्र में बुद्धिमान मशीनों का कुशलता से उपयोग हो सकता है, सफलता के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाएगा। एक कुशल शिल्पकार, कलाकार, लेखक, संगीतकार, अध्यापक या डॉक्टर को बुद्धिमान मशीनों के युग में रोज़गार तो मिलेगा, पर बुद्धिमान मशीनों का व्यवसाय में दक्षता से प्रयोग उनके कौशल को और निखारेगा। सबसे ज्यादा सफल तो वे होंगे जो एकदम नए उत्पाद, सेवाओं और उद्योगों की कल्पना करने में सक्षम होंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर मानव जाति को सतर्क रहना होगा। मशीनीकरण के माध्यम से आए परिवर्तनों से सर्वाधिक प्रभावित वे समूह होते हैं जो अपनी कौशल क्षमता में निश्चित समय के भीतर वांछनीय सुधार लाने में असमर्थ होते हैं। तकनीकों के इस बदलते दौर में ज़रूरत इस बात की है कि विशेषज्ञतापूर्ण कार्यों के लिये लोगों को कौशल दिया जाए और इसके लिये एक संरचनात्मक ढांचे का भी विकास किया जाए। हिन्दी भारत में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है। संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करने वाले कर्म में एक प्रमुख पहलू

हिन्दी भाषा है। संस्कृति व्यक्ति या समाज के चिंतन को प्रतिफलं होती है। जिस भाषा में आप चिंतन करते हैं, उसकी प्रतिछाया आपकी संस्कृति में भी परिलक्षित होती है। इसका निहितार्थ है कि भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि संस्कृति अपनी भाषा के जरिए ही जीवित रहती है। यदि भाषा नष्ट हो तो संस्कृति भी समाप्त हो जाती है।

निष्कर्ष :

कृत्रिम मेधा हिन्दी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक धरोहर का प्रसार करेगा और यह भाषा के विकास और समृद्धि में सहायक होगा। ये तकनीकें हमारे जीवन को नए सिरे से प्रभावित कर रही हैं। जिस प्रकार से विनिर्माण ने बीसवीं सदी में चीन की शक्ल बदल दी थी, उसी प्रकार कृत्रिम मेधा का सही और बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग हमारे राष्ट्र की तस्वीर बदलने की क्षमता रखता है।जो भाषाएँ नए दौर में बाजार और तकनीक से जुड़ेंगी नहीं उनका जीवित रहना मुश्किल होगा। यूनेस्को ने चेताया है कि दुनिया 7200 भाषाओं में से आधी इस शताब्दी तक लुप्त हो जाएँगी। भाषा राष्ट्रीय की आत्मा की अभिव्यक्ति है। इसका विकास राष्ट्र की पहचान है। अर्थात किसी भी देश की उन्नति के लिए उसकी अपनी भाषा का होना अनिवार्य है। अपने देश में हिन्दी माध्यम से ही तथा हिन्दी को अधिक पद प्रतिष्ठा देकर तथा इसका प्रसार या प्रचार करके ही देश को अधिक उन्नतशील एवं समृद्ध कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा की ओर – डॉ. सुरेश माहेश्वरी
2. भाषा – विज्ञान एवं भाषा – शास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
3. https.//en.wikipedia.org/Wiki/clarke %2ys theter - laws
4. लेखन – भारत में हिंदी भाषा की स्थिति – यशवर्धन श्रीवास्तव
5. भारतीय भाषा का महत्व और विकास – कपिल तिवारी
6. राष्ट्रभाषा हिंदी समस्याएँ और समाधान – देवेन्द्रनाथ शर्मा
7. हिंदी भाषा का समाजशास्त्र – सं. डॉ. अमरनाथ
8. हिंदी भाषा: स्वरूप और विकास – भोलानाथ तिवारी
9. हिंदी भाषा का संचारात्मक विकास – डॉ. वसुंधरा काशीकर
10. https://time.com/3614349/artificial - intelligence - singularity – Stephen – hawking – elon -musk

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)